M'Ed
SEMESTER – III
CODE – 105

Paper 1 – Educational studies: structure, Policy and practice
Unit - III School System, Environment and Management

- Multiple School/context
  Government, nongovernment
  Navooday Vidyalaya
  KGBAV

- Role of personnel in school management
  Teachers, Principals and administration

- School as a site of curricular engagement

- Teacher autonomy and professional independence

By
Dr. SUDESHNA VERMA
ASSISTANT PROFESSOR
IASE BULASPUR (C.G.)

1. **Multiple School context**

विद्यालय एक बहुआयामी प्रसंग के रूप में :–

- शिक्षा का मुख्य औपचारिक स्त्रोत विद्यालय है।
- जो समुदाय के मध्य स्थापित होता है। विद्यालय में बालक के Development के Context में चर्चा को तो पाठ्य चर्चा के माध्यम से शिक्षा में समानता एवं दिये गये सुविधाओं के द्वारा हम बालको में शैक्षिक रूचि सास्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, शारीरिक, मानसिक, व्यवसायिक, राजनितिक, वैज्ञानितक मौलिकता, रचनात्मकता, संवेदात्मक, सहयोगात्मक, राष्ट्रप्रेम, त्याग आदि पक्षों का विकास का बालक को समाज के प्रति एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में विद्यालय द्वारा ही विकसित किया जाता है। इस प्रकार बालक के व्यक्तित्व के सभी आयोगों को बालक में निहित योग्यताओं को पहचान कर विद्यालय में विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

2. अब हम School context के Respect में Type of level की बात करें तो हमें चार Level देखने को मिलते है।
   1. Lover primary age – 6-10 Year
   2. Upper primary age – 11-12, 13-15
   3. High school age – 14-15, 16
   4. Higher sec. level age – 17-18

Other context:-

Environment - वातावरण

Quality - गुणवत्ता

Equipment - उपकरण

Facilities - सुविधा

Technic of teaching learning process – शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की तकनिक।

विद्यार्थियों का सामाजिक पारिवारिक स्तर।

Private School	Govt. school
1. Controlled by a private body	1. Administrated by state or National govt.
2. Fee strut is higher.	2. Very low fee or निःशुल्क
3. Better in restructure	3. तुलनात्मक रूप से कम अच्चे
4. Better facilities	4. कम सुविधा युक्त
5. Up to date technology	5. कम तकनिक युक्त
6. प्रवेश के अपने नियम होते है।	6. Govt. के निर्देशानुसार
7. शिक्षकों के नियुक्ति के नियम भी अलग होते है।	7. Eligibility exam द्वारा Teachers are highly qualified
8. कक्षा का आकार छोटा होता है।	8. बड़ा होता है।
9. लेकिन Private schools में भी Same curriculum लागू होता है।	9. Curriculum is decided by Govt.
10. Board व Exam भी Same होते है।	10. Govt. के निर्देशानुसार

नवोदय विद्यालय

मुख्य बिन्दु :–प्रज्ञान ब्रम्ह Make for India

स्थापना :– MHRD (राजीव गाँधी) द्वारा 1986 राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत हर जिले में एक।

संख्या :– 661

प्रति वर्ष 80 बच्चों का चयन कक्षा 6वीं के लिए JNVST Exam के माध्यम से (जवाहर नवोदय विद्यालय संगठन Test द्वारा प्रवेश) केवल एक ही बार Exam दे सकते है।

आयु :– 8–12 वर्ष

7.5 % सीट ग्रामीण क्षेत्र के लिए आरक्षित

SC – 15 %

ST – 7 1/2 %

Girls – 27 सीट

विकलांगों हेतु – 3 सीट

निर्माण :– 25 – 30 एकड़ में

शुल्क :– Girls, SC, ST, OBC एवं BPL वाले बच्चों को कोई शुल्क नही देना होता।

हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम

त्रिभाषा सूत्र

CBSE पाठ्यक्रम

सुविधाएँ :–

1. रहने एवं खाने की व्यवस्था।
2. गणवेश एवं दैनिक उपयोग की सामग्री प्रदान की जाती है।
3. इलाज एवं स्वास्थ्य परियोजना प्रदान की जाती है।
4.

विशेषताएँ :– निःशुल्क परियोजना ग्रामीण बच्चों के प्रतिभा को निखाने हेतु।

प्रत्येक समूह के लिए House on aster होते है।

पढ़ाई अच्छी एवं पाठ्य सहगामी क्रियायें।

संस्कृति का आदान प्रदान

बच्चे 24 घंटे Teacher के निगरानी में रहते है।

सुबह 5 बजे से व्यायाम

शाम को खेल

कैम्पस में Student एवं Teacher दोनों रहते है जिससे उनमें Bond बच्छा होता है।

Student को बाहर जाने की आवश्यकता नही होती।
माहौल अच्छा होता उनका संवेगात्म विकास अच्छा होता है।
सौहाद्र पूर्ण व्यवहार सिंखते हैं।
Sport, painting, म्यूजीक व कला का शिक्षण एवं प्रतियोगिताएँ
श्रहने की प्रवृत्ति से दूर
Student में अनुशासन विकसित हो जाता है।
उत्तर एवं दक्षिण अलग–2 भाषी क्षेत्रों में बच्चों का आदान प्रदान

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय

महत्वपूर्ण बिन्दु :–

स्थापना : जुलाई 2004 में

संचालय – SSA के तहत NPEGEL के अंतर्गत संचालित भारत में कुल KGBV-3609 जिसमें 3.64 लाख बालिकाएँ अध्ययनरत।

भारत के 27 राज्यों के 2578 ब्लॉक में संचालित
कक्षा 6 से 8 वीं तक
2011 से 9 से 12 तक
1 से 5 तक कंडेस्ड व ब्रीज कोस द्वारा
भारत में K.G. B.V. के 3 मॉडल है।
मॉडल एक में 100 छात्रा + आवास + विद्यालय
मॉडल दो में 50 छात्रा केवल आवास
मॉडल तीन में 50 छात्रा + आवास + निकट सरकारी विद्यालय में पढ़ाई
आयु सीमा 10 – 14 वर्ष आयु वर्ग की ड्राप आउट बालिकायें
आरक्षण 75%,SC, ST, OBC, अल्पसंख्यक वर्ग के
25% BPL Family से वो Gen. (सामान्य) भी हो सकते है।
कुल स्टाफ 9
अध्यापिका प्रतिनियुक्ति में होती है।
SML होती है। जिसका अध्यक्ष छावास में रहने वाली छात्रा के अभिभावक अध्यापिका होती है।
100/– प्रति माह A/c में जमा होते है खर्च के लिए STDR उच्च शिक्षा हेतु सावधि योजना 2007–08 में प्रारंभ हुई।
50% 2000/– 8वीं में 3000/–10वीं में 50% लाने पर एवं 50% यदि 12वीं में आता है तो 4000/– दिया जाता है।
क्षेत्र :– सर्व शिक्षा अभियान

उद्देश्य एवं संकल्पना :– वांछित वर्ग के बालिकाओं को शिक्षा मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास है जो

- कठिन परिस्थितियों
- दुर्गमवास
- जिनकी आयु सामान्य बालिकाओं से अधिक हो गई है।
- महिला सशक्तिकरण हेतु प्रयास है।

मुख्य सुविधाए :–

- सभी बालिकाओं को आवास
- पुस्तकें तथा शिक्षण सामग्री
- स्कूल यूनिफार्म, स्वेटर, जूते मोजे।
- दैनिक उपयोग की वस्तुए जेसे साबुन, तेल, तोलिया, टूथ पेस्ट, कंघा, चप्पल आदि।

अन्य सुविधाए :–

- व्यवसायिक प्रशिक्षण
- कम्प्यूटर प्रशिक्षण
- शैक्षणिक प्रमण
- शैशिक किशोरी मेले
- स्वास्थ्य जाँच
- खेल कूद प्रतियोगिताए
- आत्म–रक्षा का प्रशिक्षण

"Role of Personnel in school management"
Teacher, Principals and Administration
शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंधन

अर्थ :–

- किसी संस्था के व्यवस्था को बनाने एवं सुचारू व सफल संचालन कैसे किया जाय। सही प्रबंधन कहलाता है।
- यह एक संगठन प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सभी कार्यरत व्यक्तियों के मध्य समन्वय जो समूह में सहकारी रूप से समान उद्देश्य से कार्य करते है।

  जिससे मानवीय गुणों का विकास हो। प्रशासन एवं प्रबंधन कहलाता है।

Worker कर्मचारी

Teacher

Student हितग्राही

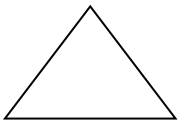

Management प्राचार्य

हम शिक्षा से जुड़े है अतः हम शैक्षिक प्रबंधन की बात करेंगे।

परिभाषायें :–

पिटर –ट्रेक जो प्रबंधन के गुरू है उनके अनुसारः–''कार्य को प्रभावी ढ़ंग से व दक्षता से सम्पूर्ण करवाना प्रबंधन कहलाता है।

एफ.डब्लू. ट्रेलर जो आधुनिक प्रबंधन क`जनक माने जाते के अनुसार :–

प्रबंधन संगठन का मस्तिष्क है

वास्तव में प्रबंधन का विकास मानव सभ्यता जितना पुराना है। जो सबसे पहले व्यपारिक क्रियाओं से आया। प्रबंधन के जनक **हेनरी फियोल** को कहा जाता है। इसके पश्चात हम शैक्षिक प्रबंधन में संगठन प्राचीन एवं शिक्षक की भूमिका को समझने का प्रयास करेंगे।

शैक्षणिक संस्था के दो घटक

मानवीय	भौतिक
1. शिक्षा समितियाँ नियम एवं नीतियों को बनाने का कार्य	1. विद्यालय भवन
2. प्राचार्य	2. पुस्तकालय
3. शिक्षक	3. प्रयोगशाला
4. कर्मचारी	4. क्रिड़ा स्थल
5. विद्यार्थी	5. फर्नीचर

कार्य प्रणाली

Short में GPO SMD CO RBE

1. Goal of the organization (संगठन का लक्ष्य)
2. Planning (योजना)
3. Organization – कार्यान्वयन
4. Staffing – कार्यरत लोग
5. Moral Level construction – नैतिक संतुष्टी
6. Direction – दिशा निर्देश
7. Co-ordination – समन्वय
8. Reporting – सेखन/प्रेषण

9. Organization – कार्यान्वयन
10. Evaluation – मूल्यांकन

नई शिक्षा निजी के अनुसार 7. कार्य होता है।

1. निजी तैयार करना – मूल्यांकन
2. समस्या का अध्ययन एवं उचित निराकरण
3. प्रक्रिया की सफलता के लिए कार्य एवं मूल्यांकन
4. समानता एवं स्वतंत्रता कर्मचारियों के लिए।
5. उद्देश्य मूल्यों, सिद्धान्तों का समान हित में निर्धारण
6. उपलब्ध साधनों एवं कर्मचारियों में समनवय
7. संस्था व समुदाय के मध्य समन्वय

प्रशासन के कार्य :–

1. संगठन के लक्ष्यों की व्यवस्था
2. सभी प्रकार के शैक्षिक उद्देश्यों को स्पष्ट करना।
3. योजनाओं का स्पष्ट रूपरेखा बनाकर नियोजन
4. परिस्थिति के अनुसार योजना निर्माण
5. कार्यकर्ता के अनुभव एवं योग्यता के अनुसार
6. प्रजातांत्रीक सिद्धान्त
7. सामंजस्य स्थापित करना
8. अवलोकन एवं आकलन
9. बजट–वित्तीय यदों की सूची
10.

शैक्षिक प्रबंधन में प्रार्चाय की भूमिका

एक प्रार्चाय शिक्षकों से कैसे कार्य करवाय जिससे Student का फायदा हो।

- योजना बनाना
- योजना का क्रियान्वयन
- मूल्यांकन

1. संस्था प्रमुख के नाते अधिनस्त कर्मचारियों एवं शिक्षकों को सहायता प्रदान करना।
2. शिक्षा संबंधी कार्यों को विधिवत सम्पन्न करना।
3. आवश्यक साधन एवं समाग्री उपलब्ध करवाना।
4. शिक्षकों व कर्मचारियों के उन्नति हेतु प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन।
5. उचित पदामर्श एवं निर्देशिन।
6. संस्था में समायोजन एवं सकारात्मक वातावरण तैयार करना।
7. निरक्षण एवं पर्यवेक्षण
8. अपव्यय– अवरोधों को रोकना

9. कर्मचारियों के क्षमता व रूची अनुसार कार्य का विभाजन
10. संस्था में कार्यरत सभी व्यक्तियों को संतुष्टी प्रदान करने की चेष्ठा करना।
11. समाता रखना व यथोचित सस्थान प्रदान करना ।
12. समय का पाबंध एवं प्रबंधन रखना।
13. आय–व्यय का स्पष्ट लेखाजोखा रखना।
14. शिक्षक व विद्यार्थियों के समस्याओं व आवश्यकताओं को जानना।
15. SMDC व अन्य प्रकार के बैठकों का आयोजनाव उचित संचालन।
16. संस्था को समूदाय तक व समूदाय को संस्था तक लाने का प्रयास करना।
17. पाठ्य सहगामी एवं पाठ्येत्तर क्रिया कलापों का आयोजन।
18. संस्था प्रांगण को आकर्षक एवं स्वच्छ रखना।
19. विभिन्न प्रकार के प्रतियोंगिताओं का आयोजन एवं प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत करना।
20.

विद्यालय प्रशासन में शिक्षकों की भूमिका

1. Responsibility of teacher – शिक्षक का दायित्व
2. Quality of teacher – शिक्षक की गुणवत्ता
3. Do and do not of teacher – शिक्षक के क्या करना चाहिए क्या नही।
4. Disentails of a teacher – शिक्षक की अनिवार्यताये।

a) शिक्षक स्वयं समय का पाबंद हो।
b) प्रार्थना एवं अपने बगलखण्ड में समय पर उपस्थित रहे।
c) दैनदनी लिखे।
d) विद्यार्थियों में आदर्श स्थापित करने योग्य हो।
e) विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य विकसित कर सके।
f) T.L.M. बनाये व उपयोग करे।
g) छात्रों से चर्चा करे व उनका मूल्यांकन करे।
h) छात्रों के योग्यता अनुसार भौतिक गुणों को विकसित करनेमें उनकी सहायकता करें।
i) छात्रों को सुनने व जानने की प्रवृत्ति रखे।
j) छात्रों को प्रोत्साहित करें।
k) उनसे स्वयं व्ययस्य न रखे। उनसे तिरस्कार पूर्ण व्यवहार न करें।
l) उनसे मित्रवत व्यवहार करें जिससे छात्र शिक्षक से अपनी समस्याओं को बता सके।
m) अपने विषय का ज्ञाता हो।
n) अपने को Update करता रहै।
o) शिक्षक में पाठ के अनुरूप प्रविधियों का प्रयोग करे।
p) पढ़ाने से पूर्व अपनी तेयारी कर लेवे।
q) बच्चों में रूची एवं जिज्ञासा उत्पन्न कर सके।
r) छात्रों का समय–2 पर उचित मूल्यांकन करें।

s) कक्षा का वातावरण ---------- रख सके।

t) छात्रों में अनुशासन रख सके।

u) शिक्षक ऐसे व्यवहार करें कि विद्यार्थी उन्हे अपना Idial मान सके।

v) प्राचार्य द्वारा प्रदत्त सभी कार्यों का सम्पादन समय से करे।।

w) प्राचार्य एवं प्रशासन के निर्देशों का पालन करें।

School as a site of curricular engagement

पाठ्यक्रम विकास के एक माध्यम के रूप में विद्यालय

आवश्यकता :– पाठ्यक्रम में पाठ्यचर्चा अर्थात शैक्षिक–लिखित ज्ञान के अलावा बालकों में समाजिकता एवं नैतिकताआदि गुणों को विकसित किया जाना शामिल है। अर्थात् विद्यालय में बालक को शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति तो होती ही है, साथ ही साथ उनके व्यक्तित्व के सारे आयामों को तलासा जाता है एवं सभी वर्गों व स्तरों के विद्यार्थियों के साथ–साथ रहने, खेलने व कार्य करने से उनका उचित रूप से समाजिकजन्य भी होता है। School में विद्यार्थियों के आयु एवं स्तर के अनुरूप अध्ययन अध्यापन की सीमा तय करते है। इसके अलावा विद्यार्थी शाला में रहकर निम्न बातों को भी सिखाता है।

1. गणतंत्रतात्मक मूल्य, स्वतंत्रता एवं भाईचारा
2. जिम्मेदार नागरिकता का विकास।
3. चरित्र निर्माण
4. सहयोगात्मक व्यवहार
5. नेतृत्व का गुण
6. अभिव्यक्त करने का गुण
7. संस्कृति का ज्ञान
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण
9. मौलिकता व रचनात्मकता के गुण का विकास।
10. प्रयोगात्मक ज्ञान
11. कौशलात्मक ज्ञान
12. संगीत एवं कला का ज्ञान
13. स्वास्थय एवं स्वच्छता की बातें।
14. मानवता का ज्ञान।
15. राष्ट्रियता एवं विश्व बंधुत्व का ज्ञान।

इस प्रकार शाला एक एजेन्सी के रूप में कार्य करता है जहाँ बालक अपने शैक्षिक लक्ष्य के साथ ज्ञान उपरोक्त गुणों को भी विकसित कर पाता जो उसे भविष्य में आत्मनिर्भर जिम्मेदार नागरिक बना सके। इसतरह विद्यालय पाठक्रम विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Teacher Autonomy and professional Independence

शिक्षक की स्वायतता एवं व्यवसायिक स्वतंत्रता

अर्थ :– स्वायतता (Autonomy) स्वाशासन

Teacher एवं Learner के मध्य कोई न आये।

Autonomy :- Derived from word autonomous

Self organizing, created by own

Ruled by own

Smith, 2001 के अनुसार :–

एक शिक्षक में मुख्य रूप से कौन–कौन सी क्षमतायें होनी चाहिए।

1. निर्णय लेने की क्षमता
2. व्यवसायिक स्वतंत्रता शिक्षण हेतु स्वयं निर्णय ले सके
3. स्वदिशात्मक – Self directed
4. स्वगठित – Self organize
5. बिना किसी दखल के With up interfere
6. शिक्षण विधियों का सही प्रयोग
7. बिना किसी डर के अपने कार्य का सम्पादन कर सके।
8. उच्च अधिकारी सहयोग करें और हस्तक्षेप न करें।

परिभाषायें :– Little 1995 :-

As the teacher capacity to engage in self directed teaching

ACC to Richard smith (2000)

The ability to develop appropriate skills knowledge and attitudes for on self as a teacher in co-operation with out hers

स्वायतता क्यों महत्वपूर्ण है

1. अधिगम वातावरण हेंतु।
2. भविष्य में आवश्यकता एवं Career के चुनाव हेतु
3. स्वयं की जवाबदेही को अनुभव करना।
4. शिक्षक स्वयं का प्रेक्षण कर सके।
5. दूसरों को सहयोग कर सके।
6. दक्षता पूर्ण पाठ योजना निर्माण कर सके।

शिक्षक स्वायतता का यह अर्थ कदापी नही है कि शिक्षक को अलग कर दिया जाय अर्थात इसका अर्थ स्वतंत्रता से है न की Isolation से। शिक्षक यदि स्वतंत्र होता तो बच्चों के Diversity अनुसार पढ़ायेगा जिससे हर विद्यार्थी समझ सके। जब स्वयं शिक्षक निर्णय लेगा तो उसका परिणाम अच्छा हो या बुरा वह स्वयं जिम्मेदार भी होगा।

निष्कर्ष :–

यह है कि यदि शिक्षक को Autonomy दी जाय तो वह अपनी पूर्ण क्षमता का प्रयोग करते हुए शिक्षकीय कार्य का संपादन बेहतर ढंग से करेगा। जबकी दबाव में वह अपनी सम्पूर्ण क्षमता एवं रचनात्मकता का प्रयोग नही कर पाता इस प्रकार स्वायतता होने पर शिक्षक अधिक आत्म विश्वास से कार्य करेगा।